पाठ संख्या	शीर्षक	मॉड्यूल संख्या
9	समकालीन भारतीय कला	3

संक्षिप्त भूमिका

- मुगल साम्राज्य के पतन तथा प्राचीन एवं मध्ययुगीन कला की समाप्ति के बाद भारत में ब्रिटिश राज के साथ समकालीन भारतीय कला प्रारंम्भ हुई।
- **जर्मन अभिव्यक्तिवाद, घनवाद, अतियथार्थवाद** ने इन भारतीय युवा कलाकारों की कला पर बहुत प्रभाव छोड़ा। इन कलाकारों में **राजा रवि वर्मा, अबनीद्रनाथ टैगोर, रवीन्द्रनाथ टैगोर, अमृता शेरगिल** एवं **जॉमिनी राय** के नाम आते हैं।
- पाश्चात्य तकनीक तथा भारतीय अध्यात्मवाद का मेल भारतीय कला का मूलभाव रहा।
- एक तरफ कुछ कलाकार पाश्चात्य शैली के साथ कुछ प्रयोग कर रहे थे और दूसरी ओर कुछ कलाकार जैसे **बिनोद विहारी मुखर्जी, राम किंकर बेज** जापानी कला एवं लोककला की ओर अपना रूझान दिखा रहे थे।

9.1

वर्लपूल

विवरण

शीर्षक : वर्लपूल
कलाकार : कृष्णा रेड्डी
माध्यम : कागज पर उत्कीर्ण आकृति
काल : 1962
आकार : 37.5 सेमी॰

चित्र की विशेषतायें

- **वर्लपूल कृष्णा रेड्डी** की सबसे प्रसिद्ध कृति है।
- इसे उत्कीर्ण पद्धति से बनाया गया है।
- **वर्लपूल** कृति में कलाकार ने परिचित वस्तुओं के नए आकार बनाए हैं जो बाद में अर्मूत रूप में परिवर्तित हो जाते हैं।
- चित्र के अनुसार सभी कुछ भवंर में खो जाता है।

चित्रकार के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- **कृष्णा रेड्डी** अपने समय के प्रसिद्ध चित्रमुद्रक माने जाते हैं।
- वह कला भवन, विश्वभारती तथा शान्ति निकेतन के विद्यार्थी रहे हैं।
- कृष्णा रेड्डी के मूर्तिकला के क्षेत्र के पूर्वानुभव से उभार किस्म उत्कीर्ण की आकृति के अर्थ एवं प्रभाव को समझने में सहायता मिली है जो उनकी इस कलाकृति का सौन्दर्य है।

स्व-मूल्यांकन

9.1.1 कृष्णा रेड्डी ने वर्लपूल चित्रमुद्रण में किस तकनीक का प्रयोग किया है?

9.1.2 कृष्णा रेड्डी के किस प्रकार के पूर्व अनुभवों से उत्कीर्ण आकृति में उनके सहायक सिद्ध हुए हैं?

उत्तर

9.1.1 उत्कीर्ण आकृति (कागज पर)

9.1.2 मूर्तिकला अनुभव

9.2 मैडीवल सेन्टस

विवरण

शीर्षक : मैडीवल सेन्टस

काल : 1947

कलाकार : विनोद बिहारी मुखर्जी (1904-1980)

माध्यम : भित्ति चित्र (Fresco Buono)

संकलन : शांति निकेतन विश्वभारती के हिन्दी भवन की दीवार पर बना भित्ति चित्र

चित्र की विशेषतायें

- **मैडीवल सेन्ट्** शांति निकेतन विश्वभारती के हिन्दी भवन की दीवार पर बना भित्ति चित्र है।
- इसको बनाने में **फ्रेस्को बुओनो** (भित्ति चित्र) तकनीक का प्रयोग किया गया है जिसमें विभिन्न धर्मो के सन्तों को दर्शाया गया है।
- आकृतियों की लम्बाई उनकी आध्यात्मिक महानता को दर्शाती है। छोटे आकार की आकृतियां सामान्य व्यक्तियों को दर्शाती हैं।

चित्रकार के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- **विनोद बिहारी** प्रसिद्ध बंगाल स्कूल के चित्रकार **नन्द लाल बोस** के शिष्य थे।
- उन्हें प्रकृति और उसकी सुन्दरता से बहुत प्रेम था।
- उन्होंने प्रकृति चित्रण की कला जापान से सीखी।
- जापानी कलाकारों की तरह उन्होंने भी सरल व तर्कसंगत रेखाओं का प्रयोग किया।
- उनकी आँखें बचपन से ही कमजोर थीं। जीवन के अंतिम समय में वह बिल्कुल ही नेत्रहीन हो गए।

स्व-मूल्यांकन

9.2.1 **मैडिवल सैन्टस्** में किन आकृतियों को दर्शाया गया है।

9.2.2 प्रकृति चित्रण कला विनोद बिहारी मुखर्जी ने कहाँ से सीखी।

उत्तर

9.2.1 विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों के सन्तों के चित्र दर्शाये गए हैं।

9.2.2 जापान।

9.3

वर्ड्स एवं सिंबल्स

विवरण

शीर्षक : वर्ड्स एवं सिंबल्स

कलाकार : के. सी. एस. पनिकर (1911–1977)

माध्यम : लकड़ी के बोर्ड पर तैलीय रंग

काल : 1965

आकार : 43 सेमी॰ × 124 सेमी॰

चित्र की विशेषतायें

- **के. सी. एस. पनिकर** के **शब्द और प्रतीक** चित्रों की श्रृंखला का यह एक प्रसिद्ध चित्र है।
- इस चित्र में स्थान को सुलेख से भरा गया है।
- गणित के चिन्हों, अरबी आकृतियों तथा रोमन एवं मलयालम लिपि के प्रयोग से आकृतियां बनाई गई है।
- यह आकृतियाँ देखने में जन्मपत्रिका जैसी लगती हैं। तांत्रिक प्रतीकात्मक रेखा-लेखों को प्रयोग भी किया गया है।

कलाकार के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- वह दक्षिण भारत में समकालीन कला आन्दोलन के प्रेणता के रूप में जाने जाते हैं।
- **मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट** में बंगाल की विचारधारा के गुरु **डी.पी. राय चौधरी** के शिष्य थे।
- उनकी शैली यथार्थवाद से लेकर ज्यामितीय तक पहुँची।
- उन्होने चैन्नई के पास **"श्री चौलामण्डलम्"** नामक भारत के प्रथम कला-ग्राम की स्थापना की।

स्व-मूल्यांकन

9.3.1 **के. सी. एस. पनिकर** ने अपने प्रारूप में किन प्रतीक चिह्नों, आकृतियों और सुलेख का उपयोग किया?

9.3.2 **के. सी. एस. पनिकर** के चित्रों में रंगों की विशेषताओं की पहचान कीजिए?

9.3.3 **के. सी. एस. पनिकर** द्वारा स्थापित प्रथम कलाग्राम का नाम बताएं?

उत्तर

9.3.1 गणित के चिह्न, अरबी आकृतियाँ, रोमन एवं मलयालम लिपियां।

9.3.2 उनके चित्र में रंगों का महत्व बहुत कम देखने को मिलता है।

9.3.3 **चौलामण्डलम**

9.4

लैडस्केप इन रैड

विवरण

शीर्षक : लैडस्केप इन रैड

कलाकार : फ्रासिंस न्युटन सौजा (1924-2002)

माध्यम : तैलीय रंग

काल : 1961

संकलन : जहांगीर निकलसन संग्रहालय

चित्र की विशेषतायें

- यह एक शहरी दृश्य है जिसमें चित्रकार ने शहर जैसा रूप दिखाने का प्रयास किया जो मात्र पथरीले जंगल की भांति दिखता है।
- सुलेखीय रूप में रेखाओं को रंगों के साथ बहुत अच्छे तरीके से संयोजित किया गया है।
- इस चित्र में मुख्य रूप से लाल रंग का प्रयोग किया गया है तथापि इधर-उधर हरे रंग के छींटे भी डाले गए हैं।
- इस चित्र में किसी भी परिदृश्य के नियम को नहीं माना गया है।

चित्रकार के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- 1947 को **प्रगतिशील कलाकारों के ग्रुप** की स्थापना करने वाले सबसे युवा चित्रकार थे।
- अपने चित्रों के माध्यम से उन्होंने सामाजिक तथा धर्मिक कुरीतियों का विरोध किया।
- वह **उत्तर प्रभाववादी** और **जर्मन अभिव्यक्तिवादी** कलाकारों से प्रेरित थे।
- विशेष रूप से **पिकासो** एवं **मतीसे** से अत्यधिक प्रभावित थे।

स्व-मूल्यांकन

9.4.1 **एफ. एन. सौजा** के चित्र **''लैण्डस्केप इन रैड''** में शहरी दृश्य को किस प्रकार दर्शाया गया है।

9.4.2 **एफ. एन. सौजा** किन-किन चित्रकारों से प्रेरित हुए।

उत्तर

9.4.1 पथरीले जंगल

9.4.2 पिकासो एवं मतीसे

क्या आप जानते हैं?

- भारत में ब्रिटिश शासन के साथ समकालीन कला का प्रारंम्भ हुआ।
- **राजा रवि वर्मा, अवनिन्द्रनाथ टैगौर, अमृता शेरगिल, रविन्द्र नाथ टैगोर** भारतीय समकालीन कला के पुरोगामी माने जाते है।
- ये **युवा कलाकार** पाश्चात्य कला आन्दोलन से स्पष्ट रूप से प्रभावित हुए।
- जर्मन अभिव्यक्तिवाद, घनवाद, भाववाद, दादवादी एवं अतियथार्थवाद से ये भारतीय चित्रकार बहुत ही प्रभावित रहे।
- ये भारतीय कलाकार भारतीयता एवं भारतीय आध्यात्मिकता को बचाए रखने के लिए अपना संघर्ष करते रहे।